HIN3B18a_cours-12-2013-04-28-résumé-1

	प्रेमचन्द	नागार्जुन	जैनेन्द्र	रेणु	अज्ञेय	निर्मल वर्मा
समय	1880-1936	1911-1992	1905-1988	1921-1977	1911-1987	1929-2005
रचनाएँ	उपन्यास कहानी निबन्ध आलोचना	कविता उपन्यास कहानी निबन्ध	उपन्यास कहानी निबन्ध अनुवाद	उपन्यास कहानी निबन्ध कविता	कविता उपन्यास कहानी आलोचना	उपन्यास कहानी निबन्ध आलोचना
आर्थिक स्थिति	गरीबी	गरीबी	मध्यवर्ग	गरीबी	समृद्ध	मध्यवर्ग
दर्शन, वाद विचारधारा, आस्था	यथार्थवादी प्रगतिवादी गाँधीवादी गोर्की, नास्तिक	मार्क्सवादी, बौद्ध दर्शन भारतीय माटी के कवि	गाँधीवादी फ्रायडवादी जैन दर्शन आस्तिक	प्रगतिवादी जनवादी मानवीय संवेदना	भारतीय चिन्तन पश्चिम दर्शन अस्तित्ववादी	आधुनिकतावादी, कला की कोई प्रासंगिकता नहीं
साहित्य में चित्रित समस्याएँ	सामाजिक रूढ़ियाँ, जातिव्यवस्था, सामन्तवाद, धार्मिक रूढ़ियाँ, शोषण साम्प्रदायिकता, छुआछूत, नारी-शिक्षा, बालविवाह,	सामाजिक, समाजवादी जनमानस लोक-संस्कृति ग्रामीण जीवन, नए समाज की तलाश, मिथिला धरती	मनोवैज्ञानिक मानसिक संघर्ष दार्शनिक आध्यात्मिक नारी पात्र अन्तर्मन चेतन, अचेतन, अवचेतन	सामाजिक जातिव्यवस्था आदिवासियों का श्रम स्त्रियों तथा निरीह जनता की चीख दमित वासनाएँ संकीर्णता	व्यक्तिगत तथा मानवीय संबंधों की जटिलता, मानव- गरिमा, भारतीय चिन्तन - आस्था की परख	मानव-संबंध, कलह, अवसाद जीवन की विसंगतियाँ प्रकृति, नियति नश्वरता अकेलापन व्यर्थता, तनाव विजातीय होने का भाव
साहित्य-कला	यथार्थपरक प्रगतिवादी वर्गचेतनात्मक मानवतावादी	सहजता व्यंग्यात्मकता तात्कालिकता प्रतिबद्धता	मनोवैज्ञानिक विश्लेषणात्मक प्रेमचन्द-पूरक वैयक्तिकता	ध्वनिमय गद्य आंचलिकता विद्रोही लेखक नए प्रयोग	चिंतनपरक सोचा हुआ कलावादी मानव-विवेक	चित्रमय गद्य चलचित्रमय संवेदनात्मक हास्यपरक
भाषा	हिन्दुस्तानी हिन्दी-उर्दू आदर्शवादी	सहज बोलचाल सपाट, सीधी	दुरूह, नवीन विश्लेषणात्मक, संकेतात्मक	ठेठ बोलचाल ग्रामीण संगीतमय	संश्लिष्ट,तत्सम अंग्रेजी-प्रभाव दार्शनिक	गंभीर, भावपूर्ण, चिन्तनपरक
यात्रा	देश	देश	देश	देश	विदेश	विदेश
भाषाएँ	उर्दू, अंग्रेजी, फारसी, संस्कृत	संस्कृत, पालि, प्राकृत, बांग्ला तिब्बती, सिंहली,अंग्रेजी	अंग्रेजी संस्कृत	अंग्रेजी, संस्कृत	संस्कृत, अंग्रेजी, जर्मन, जापानी	अंग्रेजी, चेक पंजाबी
पुरस्कार	???	अकादमी	???	पद्मश्री	ज्ञानपीठ अकादमी	अकादमी ज्ञानपीठ

HIN3B18a_cours-12-2013-04-28-résumé-2

हिन्दी की महिला लेखिकाएँ

	शिवानी	कृष्णा सोबती	मन्नू भंडारी	उषा प्रियंवदा	मृदुला गर्ग	ममता कालिया
रचनाएँ	उपन्यास कहानी	उपन्यास कहानी निबन्ध	उपन्यास कहानी निबन्ध	उपन्यास कहानी	उपन्यास कहानी नाटक निबंध	उपन्यास कहानी निबन्ध आलोचना
आर्थिक स्थिति	समृद्ध	समृद्ध	मध्यवर्ग	समृद्ध	समृद्ध	समृद्ध
दर्शन, वाद विचारधारा, आस्था	उदारवादी यथार्थवादी	मनोवैज्ञानिक प्रगतिवादी	प्रगतिवादी	आधुनिकता का बोध	पश्चिम का दर्शन आधुनिकता का बोध	आधुनिकतावादी, समाज सुधारक
साहित्य में चित्रित समस्याएँ	सामाजिक परंपराएँ धार्मिक रूढ़ियाँ, नारी-समस्या, लोक संस्कृति	नारी जीवन की समस्याएँ, सामाजिक परंपराएँ और समस्याएँ	समाज की समस्याएँ, पारिवारिक जीवन की समस्याएँ, वैवाहिक जीवन की समस्याएँ	वैवाहिक जीवन की समस्याएँ, नारी जीवन की समस्याएँ	औरत और आदमी के बीच के संबंधों का वर्णन तथा विश्लेषण, नारीवाद	औरत और आदमी के बीच का संबंध, नारीवाद, नारी की समस्याएँ
साहित्य-कला	यथार्थपरक प्रगतिवादी	सहजता प्रतिबद्धता	मनोवैज्ञानिक विश्लेषणात्मक बाल मनोविज्ञान	विश्लेषणात्मक चिंतनपरक	कटाक्ष करने की कला	तार्किक, विश्लेषणात्मक
भाषा	संस्कृतनिष्ठ, कुमायूँ की झलक	सहज बोलचाल सपाट, सीधी	सरल	सरल लेकिन आधुनिक	भाषा पर अंग्रेजी का प्रभाव	सरल तथा गंभीर संवेदनात्मक
भाषाएँ	संस्कृत, गुजराती, बंगाली, उर्दू अंग्रेज़ी	पंजाबी, हिन्दी अंग्रेजी	अंग्रेजी संस्कृत	अंग्रेजी	अंग्रेजी	अंग्रेजी, पंजाबी

	मेहरुन्निसा परवेज	चित्रा मुद्गल	मृणाल पांडे	नासिरा शर्मा	गीतांजलि श्री	अलका सरावगी
रचनाएँ	उपन्यास कहानी	उपन्यास कहानी निबन्ध	उपन्यास कहानी पत्रकारिता	उपन्यास कहानी निबन्ध कविता	उपन्यास कहानी आलोचना	उपन्यास कहानी निबन्ध आलोचना
आर्थिक स्थिति	मध्यवर्ग	समृद्ध लेकिन गरीब बनी	समृद्ध	मध्यवर्ग	समृद्ध	समृद्ध
दर्शन, वाद विचारधारा, आस्था	यथार्थवादी	मार्क्सवादी, भारतीय माटी की लेखिका	समाजवादी	मानवधर्मी	आधुनिकतावाद, प्रगतिवादी	आधुनिकतावादी
साहित्य में चित्रित समस्याएँ	धार्मिक रूढ़ियाँ, नारी जीवन की विवशताओं को आवाज	मजदूरों की सामाजिक समस्याएँ, समाजवादी ग्रामीण जीवन, नए समाज की तलाश, नारी शोषण का विरोध	समाज की समस्याओं का वर्णन, नारी मुक्ति आंदोलन	धर्म तथा राजनीति से जुड़ी समस्याएँ, धार्मिक संकीर्णता की खिलाफ़त	समाज की समस्याएँ, औरत और आदमी के संबंध, समलैंगिकता	जीवन की विसंगतियाँ प्रकृति, नियति, विजातीय होने का भाव
साहित्य-कला	निम्नमध्य वर्ग की नारी के जीवन का विश्लेषण	मजदूरों की आवाज को सहज तथा सार्थक अभिव्यक्ति, प्रतिबद्धता	राजनीति से जुड़ा साहित्य	काल, धर्म, जाति से ऊपर उठकर लिखा गया साहित्य	खास साहित्यिक शैली, आधुनिकता बोध का वर्णन	चित्रमय गद्य संवेदनात्मक
भाषा	सरल	सहज, बोलचाल	पत्रकारिता की भाषा	सरल तथा रोचक	आसान लेकिन विश्लेषणात्मक	गंभीर, भावपूर्ण,
भाषाएँ	अंग्रेज़ी	अंग्रेजी	अंग्रेजी संस्कृत	फारसी अंग्रेजी	अंग्रेजी	बंगाली, अंग्रेजी

HIN3B18a_cours-12-2013-04-28-résumé-3

- हिन्दी गद्य-साहित्य में पिछली सदी में जितने भी परिवर्तन आए हैं उनका कारण यह रहा कि लेखक ने समय की माँग को देखते हुए खुद को बदलने की कोशिश की है। उदाहरण के लिए द्विवेदी युग में नैतिकता तथा समाज में सुधार करने की भावना दिखाई देती थी। इस कारण हिन्दी-गद्य में भी इन भावनाओं का सीधा प्रभाव पड़ा। इसका परिणाम यह हुआ कि हिन्दी-गद्य खुद-ब-खुद परिमार्जित तथा परिष्कृत हुआ।
- छायावाद के युग के दौरान हिन्दी-गद्य को भाषा के क्षेत्र में अलंकृत किया गया क्योंकि इस काल में साहित्य को सौन्दर्य प्रदान करने की कोशिश की गयी। प्रसाद का गद्य-साहित्य इसका अच्छा नमूना है।
- इसी प्रकार भारतेन्दु के बाद के गद्य-साहित्य पर समाज की व्यावहारिक आवश्यकताओं का बहुत गहरा प्रभाव पड़ा है। उदाहरण के लिए हिन्दी गद्य-साहित्य में इसी दौरान नवयुग की साहित्य-चेतना को अभिव्यक्ति मिली। नतीज़ा यह हुआ कि हिन्दी-गद्य ने भी अपना स्वरूप आसानी से स्थिर कर लिया।
- इसके बाद प्रगतिवाद के युग के दौरान हिन्दी गद्य-साहित्य को वस्तुनिष्ठता मिली तथा प्रयोगवाद के युग के दौरान हिन्दी-गद्य में बौद्धिक सूक्ष्मता तथा मानसिक संश्लिष्टता आयी।
- हिन्दी साहित्य में आए आधुनिकता-बोध तथा यथार्थबोध के द्वन्द ने हिन्दी-गद्य को कई स्तरों पर निखार दिया। इसी कारण हिन्दी-गद्य में नई विधाओं (उपन्यास, नाटक, कहानी, निबन्ध, आलोचना, गद्यगीत, एकांकी, रेखाचित्र, डायरी, रिपोर्ताज, साक्षात्कार, पत्र-साहित्य, यात्रा-साहित्य, जीवनी-साहित्य) को नयी दिशा मिली।
- आजकल हिन्दी गद्य-साहित्य में कथावस्तु तथा अभिव्यक्ति के स्तर पर नये-नये प्रयोगों की भरमार दिखाई देती है। अगर हम भारतीय भाषाओं के साहित्य के सामने हिन्दी-साहित्य को रखकर देखें तो यह पता चलता है कि हिन्दी-साहित्य अन्य भाषाओं के साहित्य की तुलना में ऐतिहासिक दृष्टि से भले ही पीछे हो, लेकिन कथावस्तु और अभिव्यक्ति के स्तर पर किसी भी साहित्य से पीछे नहीं है।
- हिन्दी गद्य-साहित्य की जिम्मेदारियाँ दिन-ब-दिन बढ़ती जा रही हैं क्योंकि एक ओर तो इसे संस्कृत साहित्य से प्राप्त हजारों वर्ष पुरानी सांस्कृतिक परंपरा को ध्यान में रखना है तो दूसरी ओर आधुनिकीकरण के कारण आई नई चुनौतियों का भी सामना करना है। इसके अलावा हिन्दी गद्य साहित्य को अब हिन्दीतर भारतीय प्रान्तों तक भी पहुँचना है, वहाँ की साहित्यिक परंपरा को भी आत्मसात करना है।